ASIA ARCH[illegible]

1.291

[illegible]

१

१॥श्री सुदायकाय हयमदसरु करा

१ श्रीरत्नस्यलिमममकालनम४॥

१र्तें६

गुह्यकनायमम्

१ ॐ नमो गुह्यकाल्यै नमः ॥ अथ गुह्यकाली पूजाविधि
ः ॥ यजमानेन स्नात्वा पी ॥ पूर्व स्याउ नयाय कि ॥ अर्घ्यादि
पाद्य ॥ दवस्नानादि ॥ यद्दः सिन्दूर उजमका नानापुष्पादि
॥ अनार्य्येन ॥ गुरु नमस्कारेन कृत्वा ॥ ॐ जम्बुखण्डुमण्डुलाका
नंह व्यादि ॥ ॐ जय्यधूपाय कायु पूजयामि ॥ ॐ जय ध्यास्वपा

दूकी ॐ जकूम्भोस्नयादूकी ॥ ॥ ॐ ज क्लिनि शविद्ध काङ्क्लाय
हूँ ४ अस्त्राय स्वाहा ॥ दस्रादिस्ववनी ॥ ॐ ज ह्रीं ह्रुं स्वाहा वज्रयक्ष
लम्बा सा ॥ वज्रीकरनं ॥ ॐ जवतमकूल कुलमल ह्रीं ह्रीं ह्रुं स्व
ः स्वाहा ॥ दस्रासिद्धाव ॥ ॐ ज क्लिनि शविद्ध काङ्क्लाय हूँ ४ अ
स्त्राय स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवति दक्षिणकालिकायै गुह्यकाल्यै

यायू ॥ ॐ क्रँ कृत्तिकायै कुलादियायै क्रँ नर्त्यन्यै यायू ॥ ॐ
क्रौँ क्रौँ ड्रँ वर्द्धनभिषकूँ श्यामध्यमायै यायू ॥ ॐ श्यानकू
श्या नामस्त्वीवकूनूयायै क्रँ श्यान्कूनाभिकायै यायू ॥ ॐ
क्काक्कीमहँ नानिकायै क्रौँ श्याकनिष्ठायै श्यायायू ॥ ॐ
कि नि२ विश्वकाकूलायै क्रँ४ कवनलायै यायू ॥ कर्न:

न्यास ॥ ॥ ॐ नमो भगवति श्रीउर्द्धवक्त्रायै या
यू ॥ ॐ क्रँ कृत्तिकायै श्रीपूर्व्ववक्त्रायै यायू ॥ ॐ क्रँ
क्रौँ कुवर्द्धनभिषश्यादक्षिनवक्त्रायै यायू ॥ ॐ श्यानकू
श्यानामस्त्विवकूनूयायै श्रीउत्तरवक्त्रायै यायू ॥ ॐ
क्काँ क्कौँ महँ नानिकायै श्रीपश्चिमवक्त्रायै यायू ॥ ॐ

ॐ डाकिनि शविश्वरूपायनायपवक्त्रायेपायू॥ ॥वक्त्रे
न्यास॥ ॥ॐ नमो भगवति हृत्कमलायै क्रों श्री हृद
यायपायू॥ॐ ॐ कृं कृत्तिकायै कूलद्वीपायै क्रों लि
नमः स्वाहा॥ॐ डाकि डाकि द्वर्द्धनगिरिवु द्रु श्री गिखुयै वोष
ट्॥ॐ धानेन्नूघानव्यघागामूर्ष्वि यद्रुनूयाये द्रु श्री कव

चायै द्रां॥ॐ स्त्रास्त्रा मद् कार्णिकायै द्रों नत्रत्र यायै वषट्॥
ॐ डाकिनि शविश्वकाङ्क्नायै ॐ ४ जूस्त्रायै हृद्रू॥ ॐ न्यास
॥ॐ दगिरिवास्थान यायू॥ॐ स्तगिवस्थान यादुकी॥
ॐ दूँ ललाट यादुकी॥ॐ मै वक्त्राययो॥ॐ लहृदय
यपाः॥ॐ वनाभि यायो॥ॐ गुह्यायो॥ॐ यजानो

या ॥ ॐ उड्डयाद्वयया ॥ नवात्मादेव्याम् ॥४॥ नमो उत्
याण्यपूजा ॥ ॐ ऊ लयाणपादुका ॥ ॐ ऊ ह्रौं ज्ञानन्दशक्ति
हैनवानन्दवीनाथिक यें म्लूं ध्याउल्याम्भूं ण्टदानका
ययादुका ॥ ॐ ऊ क्रा हृदया दिवतल्म्यूल ॥ ज्ञायाद
नादिक्षेत्रमूर्द्धादर्गं यन्नापून्मयवि ॥ ॐ ऊ कृत्तिकायेवि

भ्रमे कृतदीयायेक्षामदानन्दे४कृद्धिवुयादयापू ॥ ॐ
मिउल्यापुणयूजा ॥ ॥ नमो ज्ञार्दयाणयूजा ॥ ॐ ऊ क्रौं द्री
ह्रूं यसू नरघानरननननानूरनूययवनरयवुन२ काहूर वमर
दमरयियरघानयरविद्यानयरविद्युरदैं २ हूं क्राणाम
दाकामान्ति काविद्युयादुका ॥ ॐ ऊ ज्ञान
न्दशक्तिहैव वानन्द श्रीमहाविद्यावाउज्वरी

श्रीसूर्य्ययात हृदयादिकायया पादुकां ॥ ॐ ओं ह्रां हृदयाद्वि
षत ऌंन पूजा ॥ आवाहनादि थानि मूद्रां दर्शयत ॥
ॐ धाति सूर्य्यायात पूजा ॥ हृनसुद्धि ॥ ॐ ओं ह्रीं श्री क्रूं ह्रीं
क्लीं ॐ भ्रूं ॐ ह्रौं ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ ॐ ओं चन्दनेया पादु
कां ॥ ॐ ओं ह्रां सूकूण यादुकां ॥ ॐ ओं अवनाव हम्मयादुकां ॥

ॐ ओं क्रूं ओं नमादनियादुकां ॥ ॐ ओं ह्रौं सूर्य्यपादुकां ॥
ॐ ओं ह्रौं पादुकां ॥ मादनीरूपा ॥ मालनीय (०) ७ ॥ ॥
यक्षबलि ॥ ॐ ओं वावदूकनाथाय बलिं गृह्न २ दूरू २ स्वा
हा ॥ ॐ ओं ह्रां क्रूं त या लाय बलिं गृह्न २ दूरू २ स्वाहा ॥ ॐ ओं
यायामिनी बलिं गृह्न २ दूरू २ स्वाहा ॥ ॐ ओं भ्रूं सि

द्धिं वामूलुाय वलिं ग्र ह्नार ह्रूं ह्न्दू स्वाहा ॥ ॐ गं गगन
यनयवलिं ग्र ह्नार ह्रूं ह्न् दू स्वाहा ॥ आवाहनादि नऊँनी
दनुयानि विन्दू ग जमूद्वांदर्भ यिग ॥ विन्दू वियु ॥
ऊाय स्वाग ॥ गौर्य्याध्यूतं कूमानं गगेनपलवं गंद्धे
नुर्य्यागिनी श्री वामूलुं विनुत्र यादूविन ह्ल्यद्नी

विपूस्नगल्लग्नीयपूध्याऊर्द्धूयदी यामिखमधूयलिवा
नखिनंदू सिमाकूयकूगंयुऊकानादद नुयिनसउं कि
युदाग ॥ ॥ नर्यंल ॥ न्यानह्वाय ॥ श्रीसंवलान्तूा [illegible]
याय ॥ नऊँनादनुयानि विन्दू ग जमूद्वादर्भयग ॥ वि
लोर्वीयास ॥ ॐ ह्रूं हृदयादिखउह्नन्यास ॥ ॥

आसना॥ ओँ अक्षनगकूयवायू॥ ओँ जनूनकासनायेया
यू॥ ओँ स्कंदायायू॥ ओँ कुलायवायू॥ ओँ नानाय
यायू॥ ओँ यक्षायवायू॥ ओँ यणायवायू॥ ओँ कैग
लायवायू॥ ओँ कल्लीकायेवायू॥ ओँ सिंलसनाय
यायू॥ ओँ महिषासनायेवायू॥ ओँ गुलसनाये

यायू॥ ओँ निगुलसनायेयायू॥ ओँ ह्रीं पञ्चयुगास
नायेयायू॥ आसन॥ कामदूयामहाभजायू गाकादि
लयवर्द्ध सा। ला काव स नि ला का ला य श्म वा ग स म प्र ला।
सर्वेयत्न वि चि जं गी. ज्ञ म्बि का रूनवि प्र का। जू द्वा
दगजुजा दि श्या, ना नाय द्व ब रंधा घ ना। ना ना य सध

त्रादत्वा ॥ ॐ वाक नान्यविद्य गारव ॐ यागं कुलमस्थ
कयालं कुलिगाक्ष ऊँ ॥ नथीं गङ्क्ष नथाच्यं अनवमय
वनयुदा ॥ रूद्रके धनूश्यागय स्वद्वाङ्गं सकमनुलं ॥
गूलगदलवीलभवगदार्ह्रिया ॥ ऌ नकन ॥ मनुवबद्र
यिलाउ, सिगनूथनलहाबनं ॥ ध्यानयुथ्यंयाय ॥ न्मूया

दनादिपूजा ॥ ॐ जमे श्रीमत्स हेलवीगु श्रुंस्यर्थ्येयाउंस
मर्थ्येयाभिनमश ॥ ॐ वं, जूर्थस्नानावमनी, यन्दन, सिन्दूर, जु
कनयूथं ॥ ॥ ॐ जमे स्वाँ ॥ श्रीमत्स हेलवीगु श्रुंव
त्रास्थापिकाये थ्रयाक्षत्निं पूथ्यंयादकां पूजयामि ॥
ॐ जमे हृदयादिल षडङ्गनपूजा ॥ बलि ॥ ॐ जमू ध्यानक्रों
क्षौं हूँ क्षौं म्रौं गुह्यक श्यवाम हाग क्क विग्रास प्रदाय बाधिक

थ्या न ह्रौं ध्या न ध्या न ग न ह्रूं ह्रूं सर्व्व ग ४ सर्व्व सर्व्व ह्रौं ह्रू स ४ ह्रौं
हूं ह्रूं पद्म ४ यायू ॥ ॐ ओं वज्रकुब्जिनी क्लें ऐं ल्हाक्ष कर्व्वण
ह्रौं कामांगद्रावनी ह्रीं क्लीं मदन क्षा एकानन्दैं सामस्त ४ ग्री
यायू ॥ ॐ नमो भगवती ह्स्ख्फ्रें कुब्जिकायै ह्रां ह्रीं ह्रूं ध्यान ञ
ध्यान ञू ध्या नामुखि छ्रां छ्रीं किणि ४ विच्चे यायू ॥ ॐ नमो भ

गवती ह्स्ख्फ्रें कुब्जिकायै ह्रां ह्रीं ह्रूं ङ ञ ण न म ञू ध्या नामुखि
छ्रां छ्रां किणि २ विच्चे यायू ॥ ॐ भगवति सिद्ध ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रीं कुब्जि
के ह्रां ह्रीं ह्रौं खगणैं ध्यान ञू ध्यानामुखि छ्रां छ्रीं किणि २ वि
च्चे यायू ॥ गन्ध ब्रह्माण्या दि पूजा ॥ ॐ हंसासनाय यायू ॥ ॐ
ॐ वृषासनाय यायू ॥ ॐ मयूरासनाय यायू ॥ ॐ गरु

तासनायथायपू॥ ॐ मद्दिषासनायथायपू॥ ॐ गजासना
यथायपू॥ ॐ वृषासनायथायपू॥ ॐ सिंहासनायथायपू॥ ॥
ॐ ब्रह्माण्यै विश्वयाद्कांपू॥ ॐ कं माहेश्वरी
विश्वयायपू॥ ॐ यं कौमारी विश्वयायपू॥ ॐ टं
वैष्णवी विश्वयायपू॥ ॐ नं वाराही विश्वयायपू॥
ॐ यं इन्द्रायणी विश्वयायपू॥ ॐ यं चामुण्डा वि
श्वयायपू॥ ॐ सं महालक्ष्मी विश्वयायपू॥ स्तुति थ
क्षा क्षादि॥ ॥ ककाऊयादिपूजा॥ ॐ हं
ऊयाथेयायपू॥ ॐ कं वीऊयाथेयायपू॥ ॐ गं
जूऊिनाथेयायपू॥ ॐ लं भूयवाऊिनाथेया

पू॥ ओँ अ मं ऊ ह न्री याय पू॥ ओँ अ लं स्कं ह न्री याय पू
॥ ओँ अ वं भा ह्रा न्री याय पू॥ ओँ अ यं ज्म्लू क यें न्री या
पू॥ ओँ वं वलि॥ ह्रूँ निजयाद्धि पूजा॥ ॥ ओँ अ
क्लीं वज्र ध म ह्रि थ्या गि नी ग १ ल ख्या न म याय पू॥ ओँ
अ क्लीं वज्र ध म ह्रि थ्या गि नी ग १ ल ख्या व लिं गृ ह्न

२ सर्व ग॥ क्रि कृन्तू २ मम सिद्धि कुर्वन्तु ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥
थानि पूजा॥ विन्दुनादपर्यन्तं॥ ह्रूँ विशुद्ध ध्य नी पूजा॥ ७
गणा उन्मल हें न व पूजा॥ ओँ अ क्लां हृदयादि स तं गन्धं
स॥ आसनं॥ ओँ अ न्मु क्ष ग ग कयायाय पू॥ ओँ अ न्मू न का
सनाय याय पू॥ ओँ अ स्कंदा याय पू॥ ओँ अ नू कुलाय याय पू॥

न्रु ॐ नानायययापू ॥ ॐ यश्मायययापू ॥ ॐ यशायया
पू ॥ ॐ कृष्णलायययापू ॥ ॐ कल्लिकायैयापू ॥ ॐ मि
दासनायैयापू ॥ ॐ मद्दिवासनायैयापू ॥ ॐ ग्धुंगास
नायैयापू ॥ ॐ निद्धुंलसनायैयापू ॥ ॐ गवासना
ययापू ॥ ॐ सं श्रीसनायययापू ॥ ॥ ध्यान ॥ नीला

नमस्तप ऊं तिन गुंच दिगम्बरं । मनुमालाधरं वोद्धं
गरुवर्म्मविधयुक्तिं गं ॥ ध्यानपूर्वनमयापू ॥ आवाहनादि
तिपूर्वनमूजा ॥ ॐ क्ष्रौं यग्गुयमिमस्तान्त्र लहिंगवाययाद्ध
समर्घ्य्या मिनमा ॥ अर्घं, पूर्घं, स्नाना, चन्दन, सिंदूर, जूदान,
पूर्वी ॥ श्यया ऊलि ॥ ॐ स्त्रैं श्रीयग्गुयमिम

स्नान स्ले हेय वाय थ्व अङ्गति पूर्व याय्‌ ॥ २ ॥ बलि ॥ ॐ ह्रूं
ह्रः थ्व या दिन पूजन ॥ बलि ॥ ॐ जम्बू धान ह्रां थ धान ह्रीं धान
श्मन ह्रूं हुं सर्व्व गं ४ सर्व्व सर्व्व ह्रः श्मस ४ ह्रां वृद्दनु यद्ध ४ याय्‌ ॥
ॐ जव ह्रं कुद्विनी ह्रूं ॐ ता ह्रां कवनी ह्रीं कामागद्राव नी ह्रीं
ह्रीमन्ह ह्रां एकां गं ॥ वेसोस ४ श्री याय्‌ ॥ ॐ नमो रागव

ती ह्रूं कुद्विका यै ह्रां ह्रां ह्रूं धान जू ह्रां न जू धामू खिच्छा ह्रीं
किलि शविश्व याय्‌ ॥ ॐ नमो रगवती ह्रूं कुद्विकाये ह्रां ह्रूं
ह्रूं ह्रः नन म जूधा नामू खिच्छा ह्रीं किलि शविश्व याय्‌ ॥ ॐ
हे गिंसि ह्र ह्रां ह्रूं कुत्रिक ह्रं ह्रां ह्रौं खगे ॐ धान जू धा
नामू खिच्छा ह्रौं किलि शविश्व याय्‌ ॥ थ्व बलि ॥ नमो भूमि

ASHA ARCHIVES

1291

ASHA ARCHIVES

লি ক

শ্রীরা

नाद्रुन दियूजा॥ ॐ जंबूनूलि नाग हैन वायययायू॥ ॐ जं हुनूनू

हैन वायययायू॥ ॐ जं उँ वँनु हैन वाय्ययायू॥ ॐ जं रुद्रा धहैम र्व

ययायू॥ ॐ जं उ उन्मत्त हैन वायययायू॥ ॐ जं ॐ कयाली सहैन

वायययायू॥ ॐ जं ॐ लीमन हैन वायययायू॥ ॐ जं जूसंहाव हैन

वायययायू॥ ध्वनयलि॥ ॥नमाद्रुकादियूजा॥ ॐ जं हस्तुक

हैन वायययायू॥ ॐ जं त्रियूनान्तक हैन वायययायू॥ ॐ जं अग्निवर्ण

न हैवाय्ययायू॥ ॐ जं जूग्निजिह्वा हैन वायययायू॥ ॐ जं काना

द्र हैन वायययायू॥ ॐ जं काया लीग हैन वायययायू॥ ॐ जं वक

याद हैन वायययायू॥ ॐ जं लीमनूव हैन वायययायू॥ ॐ जं हाठक

हैनवा ययायू॥ ॐ जं ञूवन हैन वायययायू॥ ॐ जं मघलसून

हैं नवायया पू ॥ ॐ नमो ४ बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ङ कुं क्रां क्रीं क्रूं हैं हैं
हैं हौं नालङ्किमुदस्तं काङ्घाथावदस्वाए यानकउर्द्धक्रमगम्भव
क्रां क्रीं क्रूं यातव क्रोदनासर्वविघ्नान्नाशय २ बलिं गृह्न २ स्वाहा
॥ आवाहनादि त्रिमूत्रमुद्रां दर्शयेत् ॥ ॥ विलोमसमारकाया
त्रिया ऊर्ध्वलि ॥ बलिमाव थन ॥ ॐ ङ क्रां क्रूं पपालाय बलिं गृह्न

२ स्वाहा ॥ ॐ ङ बां बटुकनाथाय बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ङ गं गण
पतये बलिं गृह्न स्वाहा ॥ ॐ ङ दूं महाकालाय बलिं गृह्न २ स्वा
हा ॥ ॐ ङ क्षौं क्षेत्रपालसिद्धिवामण्डलायै बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ङ कनक
व्भंगं ऊनाय बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ङ आकाशवासिनीभ्यो
यूया १० बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ङ सर्वभूतादेवताभ्यो बलिं गृह्न २

स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वग्या रुद्रगणेभ्यो बलिं गृह्न स्वाहा ॥ ॐ इन्द्रकुबेरादि ग
णेभ्यो बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ऋषि सिद्धादि गणेभ्यो बलिं गृह्न २ स्व
हा ॥ ॐ ब्रह्मान्यादि मातृगणेभ्यो बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ भूतव
न्सुदिनगणेभ्यो बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ क्षयादि गणेभ्यो बलिं गृ
ह्न २ स्वाहा ॥ ॐ हूं हूं व ४ स्व ४ बलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ [illegible]

ॐ श्री मम द्विनायक [illegible] सर्वार्थ आयु ४ कामनार्थे बलिं गृह्न २ स्वा
हा ॥ समय बलिं दद्यात् ॥ ॐ सर्व्वयी [illegible] भययी अनिद्रा
य [illegible] नमवच ॥ कृपाय कृतसीया द सर्व्व दिग्भागमस्थिता ॥ या
गिनायागवाम्बा ४ सर्व्व [illegible] समागता ॥ ते दृष्ट्वा सहाय कृ
श्रीनाथा वन दामम ॥ य [illegible] सा समनदवी ॥ पूजयाम्बिनम

।सर्व्वसिद्धिप्रसादाम दविनबाँल्व ल्हदा।वी।नार्न्याणिनी।ना
यस्यविषन्किमद्दीगलाणत्रयान्मालिंदवी।समयाप्याल्लमलकु
ध्रूणिस्थलिमन ४ यूद्धि।मांसमदाह्लिडीविग।निकूर्णजम्बु
द्वीपाना।योगिनीगल संकूत।कूकुकादिकृत्स्व ग्रादिदूर्न्निमि
त्तदूषिणा।निकृर्णयम्बुदूष्पाना।योगिनीगणसंकुला।ॐ

नादिषूयवी ०।न्तुयमामाव कार्ष्ठिना ४।डाबषाधान्तुसंदाल।द
४सहविदसासवामदायागालाव न्याल्नु।सर्व्वस्थानानवधूप
।योगिनीयागयूक्त्वा।सत्यलिद्वन्तुसाधका।वीनकर्म्मसू
वीनद्वा ४ सत्यलिङ्कन्किदवंगा।४ सिद्धाम्बयूजकायार्थ्या।सा
धकाद्धिलिमायिन ४ नगमवाथञ्जामवा।जूनद्वावालसिद्ध

र।वायीकूर्पंकर्पूकृत्वा।भगवान्मातृमनुत।नानारूपधर्म
न्ययि।वटज्ञाविविधानिर॥गन्धमर्व्वपितनुञ्ज।वलिगन्धनु
मस्तदा॥सवन्भगवान्दंतांषा।सर्व्वमणदूत्तप्रद॥प्रातर्वंरू
न्मयाकर्म्मयत्कृतनिक्षामियकृतं।वलिपूर्व्वप्रदानन
सनुद्धामममयिनिकां॥४॥सर्व्वकर्म्माणिसिद्धिनुसर्व्वदा।

षप्रसानुम।शिवशिक्षियप्रसादामकुलानन्दनमाम्यद॥
ॐमिममयवति॥ ॥आवाहनादियानिमुद्रादर्श
य ७॥चन्दनसिन्धूरअकननानायुध॥गन्धाधूपावैं ॐ
गुनीगुग्गुलुनीरवकर्पूरमलयगनाहरं।धूपवासम्यसर्व्व
साधूपायप्रतिगृह्णा॥ ॥दीप॥ॐ ॐ सूर्यकायवदन्ती
यंसर्व्वग्रिमिमितायदं।सवाद्धात्यन्कनंझामि।दीपायप्रति

गृह्णगी॥ ॥नैवद्य॥ॐ अन्नं म्महारसं दिव्यं रसैः ष्ठ

हिःसमन्वितं । मयानिवेदितं तुभ्यं गृहाण परमेश्व

री॥ ॥फलताम्बूल॥ॐ नारिकेलं वरद्रा क्षं ता

म्बूलं यवमं गध्या । जम्बुदाडिम्ब आम्राय फलानीयं प्रति

गृह्णताम्॥ इदं फलताम्बूलपुष्पधूपदीपनैवेद्यादि स

कल्प उपभोक्तिगी॥ भूतमक्षादि॥ अन्नसंकल्प जूष्टि

दुमस्तु॥ जलक्षनायी॥ जाप॥ ॐ अं क्लीं कृपानाय स्वाहा॥

ॐ श्रां क्रीं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं स्वाहा॥ ॐ द्रुं म्हुं क्षप १०८

॥मन्तुलक्ष्याव॥ श्री सर्वा॥ त्रिदेवया॥ महामाया॥ ॥

कुं नमा गुह्यकस्वर्यं॥ उजापूकादिविलेम सगनायनि षम

॥पी० नया नमः श्वेगत स्तागुह्यक गायगुप्त निम्र नमो दे

वबामर्लयुका । बोद्धा याधादर्शनानाध्यायवमयवमदास्त्वम

याप्रसिद्धाय स्कान्धाय श्रीगिणा ग्र्न नय नियदूष्ठ स्युर्ग
न्नौ नमामि ॥ गुह्य गायद्म स्त्व ग्लि वदन धमा लाल्कि काम
द्रुमा रा ध्य कादत्त द्विन स्त्रा त्वमिरवग न्यलि कु वज्र कुस
यक्रादक्षघन्ध्व वनयं द्धवनिरु लधनु ० यागस्व द्वा न्न कू
न्धुग्रहृत मा ऊर्घ्व वी नी रुयम मिव रुः सां स यादवाम रुह्म
॥ गुह्य ग्ध नीम द्रा ला ग्मा निर्यं यग्गुयमीय गी । नवाल

स्वाहसदानोमि रुयथो नान्तु कानि णी ॥ कामाख्या वनदाद
वीनी नयर्द्ध नवामिनी ॥ सादवी उगणा माना यानिमूदन
मा म्तु णा ॥ वौ द्वाना मार्ग्य कपालवमसि रुगवमी गम्हवा
नालि वाख्या यक्रा द्रूम कीलिकाना दूग सकलविपत्व द्वि
नासर्ऊ नानी । स्य य ग्री वैदिकाना ग्र कृ मि निग्सद्वावि
गुरू नास्ता स्वा कानी सयं वाली रुपया वदू विपिरुत दा

दविद्गर्भे लभव॥ कायेन याचा मनसा त्रियेर्वा बुद्धान्मनाव
युकुनिस्व राचा ॥ कवामि यल्लसकलउउत्यं गुरूभ्यस्वनी
दविसमर्थयामि॥ श्रूनिग्राग्युरूभ्यस्वनीस्काएं समाप्त४॥ ॥
लूतम्यादि॥ नमस्काय॥ समयद्वाय॥ वतिसदा कावादवस्क
द्वाय॥ यर्थन्याय॥ त्रियाऊत्तिवेंऊकालि २वऊंभ्यस्वनीयाद
दसुयनमा॥ ३ ॥ कैतवकायावचायसमानेन॥ ऊ४ जुम्ह

यरू द्दा॥ थनवालसपूजा॥ यसु दथ्याग्रेमंस्मध्या॥ यसु
लखन दाय॥ चन्दनादिनवंवक॥ समयनकुन्थ्यानदायक
यसुमनकुकनऊवकुसलागसमयवो॥ त्रेंऊयसुयाम्ह
यविघ्न दविघ्यकर्म्मायिधामद्दिनेन्नाऊांवव्रथादयात॥ कु
रवंतेका यावचाक्रुयाय॥ जूद्यादि॥ म्याय॥ गिनद्दाय॥ स्माग
कूपयउयमादामाया॥ दवस्कदक्लिलागया॥ [redacted]

ज्ञानगन्धादि॥ वाक्कनष्टाय॥ सर्वसनयाय॥ आचार्याय नद
क्षिणाविय॥ समयकाय॥ सत्वन॥ जुविमत्य॥ वन्दन
सिंधुसगुनमोदनीक्षाय॥ लोनकाकाय॥ न्यासनि
काय॥ वलिथाय॥ हृद्यसाक्षिथाय॥ लोकेऽस्मिन् कर्मया
न्कः॥ ७॥ इति शिष्यानुग्रहक्षमोपूजाविधिसमाप्तः॥ ०॥
२ ॐ नमः श्रीगुह्यसमाजाय वज्रसत्वाय देवीनमः॥ स्कन्दउवाच॥ शृणु तात

वमूरवादमन्नाम्नामहत्त्वदमुकः। पूनः दक्षामहादर्वो म
यावकलशेहव॥ १॥ देवदेव महादेव हृदिमस्तागमूर्तिमं
। गुह्यसमाजमामालागश्रेगुमिद्धामिनत्वन॥ २॥ श्री कृष्ण
उवाच॥ शृणु वत्समहायुक्तागुह्यसमाजमयादिमं। सवयाव
हन्तव्यपुरुषनाम्नामहत्त्व र्वेदंगं॥ ३॥ जम्बुद्विपस्थितवर्णनदुःख
न्दामायणिमवयागुह्यागादवमावीजं ॐ नमः कीलकन्था

॥ ५ ॥ गुह्यवासिनि शाक्तिमध्यविनियोग ४ ब्रक्लिह्नि ॐ गुह्ये
श्वरी गुह्यमाला गुह्या गुह्यादिनाशिनी ॥ ७ ॥ दविदवल्लदा
दयावृन्दे गन्धर्वसविना । लावण्या लाक्ष्मीमाया, मधूलादि लस
निला ॥ ८ ॥ कालिकला वनी कान्ता कमनीयाकुजालना । हैम
वीली खनावद्धारत्वानी हृनिदायिनी ॥ ९ ॥ पार्वती पर्वतस्थाय
गुह्यमाला गणेश्वरी ॥ वन्दिका चन्द्रिका वक्त्राव हृद्म गुलयलि

नी ॥ ७ ॥ स्वर्णभूषणवाक्मुखाविनिनी लयगालिनी । हेरुन्द्राना धृष्व
योगिनी हैं ह्रीं ह्रैं वावर्णविल्विका ॥ ९ ॥ वन्दनालिक सर्व्वी मल ज्ञानकी
नगनन्दिनी यामूर्त्ति योगिनी यन्त्रायन्त्र यन्त्रनायिका ॥ १० ॥
यन्त्रयनी यन्त्रभूया यन्त्रमन्त्र विराजनी ॥ विश्वेश्वरी विश्व
माता नन्दिनी शमनी गुह्या ॥ ११ ॥ गङ्गा गोदावरी गयाम्ब
यत्रिगम्भूतनलना । माहेश्वर नाम हाविद्या मादामायामला तत्त्व
सिद्धि सम्भ्रम महालक्ष्मी मन्दरादिनिवासिनी । कुलेश्वरी सु

नी॥१५॥कामङ्गवी कामामाला कामदा कमललोचनी। नाभिकान
सिकाला ना सर्ब्ब कल्यानवृधिनी॥१६॥नन्दारगवति लख्याध
वनी धर्म्मवर्द्धिनी। वानूयम्यकमालाख्या अमला अमललोचनी॥
१७॥पूर्नचन्द्र निशोद्रीव अजानी वृद्धमा हिनी। ब्राह्मी वैष्णम
यीयक्षा नन्दनूयानथाव्यवी॥१८॥सावी[illegible]कमीहे
मी यक्षशेमीवसनीयमी। नछिरनी शुववर्नगानी वृबमीयघला
वनी॥१९॥मा जिवद्धावृवदना गुह्मकमण्डलवक्षिनी। अक्ष

र्द्धवगन नाम्ना शुम्भ कुम्भ श्यामसमन॥१८॥मेयानि
यैपुयल्लैन वैमेल्ल साल्गुकाकीर्तीय ० द्वायो ० यद्याधि
।श्टनूया[illegible]यिमानव॥१०॥सर्ब्बपायहन्नपूर्न्वं यघका
र्ग्यं कृथ वंनाय४य०त्त्राणनूक्रय ञावानै नियघ४गु
ह्यों३१०नित्ग्रीस्वर्कि दपूवाल्ये हिमयम वलुगुभ्र
ल्वयीभूख्यर्ल नुगण नामस्तोत्रंसमाप्ता॥लिखितं सूधवा
जूसूर्धयाविधिंस्न हनकासिद्धा शुभ॥ ७ ॥सवत ८७१॥:

५